वार्षिक प्रगति आख्या

वर्ष 2010–2011

उत्तरापथ सेवा संस्था
ग्राम : कमतोली, पत्रालय : भण्डारीगॉव
जनपद : पिथौरागढ़, 262552, उत्तराखण्ड
दूरभाषः 05964–278673, 09451814288, E-mail: Uttarapath_india@rediffmail.com

पृष्ठभूमि

देश में प्राकृतिक सौन्दर्य, संसाधनों से परिपूर्ण उत्तराखण्ड को जहॉ एक तरफ देवताओं की निवास स्थली के रूप में मान्यता प्राप्त है, वहीं दूसरी तरफ यहॉ के गरीब एवं पिछड़े वर्ग के समुदाय को अपनी दो जून की रोटी–पानी की व्यवस्था हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में महिलाओं की स्थिति निहायत दयनीय है, भोर से ही घर के काम–काज, दूर दराज जंगल से लकड़ी एवं घास लाने, पानी लाने, खेती–बाड़ी के साथ–साथ अन्य घरेलू काम में भी मदद करना दैनिक दिनचर्या का अंग बन चुके हैं! इसके बावजूद भी यहॉ की महिलाओं के श्रम की न तो कोई कीमत है, और न ही पहचान एवं सम्मान मिल पाता है। हमेशा से महिलाओं को हाशिये पर ही रखा जाता रहा है।

विषम भौगोलिक संरचना के ताने–बाने से जूझती, पहाड़ो के सदृश उतार–चढ़ाव भरे जीवन में भी अपने लक्ष्य से अविचलित एवम् अडिग ऐसे मातृशक्ति के जीवन में सामुदायिक भागीदारी के तहत आर्थिक परिवर्तन की सोच रखने वाले समाजसेवी व्यक्तियों के समूह द्वारा ***उत्तरापथ सेवा संस्था*** की स्थापना सन् 2002 में की गयी, जिसका पंजीकरण ***सोसाइटी रजिस्ट्रे न एक्ट ,1860*** के अन्तर्गत 5 अप्रैल, 2002 को कराया गया।

हमारा मि न

''गरीब एवं वंचित वर्ग की महिलाओं को आजीविका के वैकल्पिक तरीकों के माध्यम से आर्थिक एवं सामाजिक स क्तीकरण करना, ताकि उनके जीवन भौली के तरीकों में सुधार एवं गुणात्मक बदलाव आ सके।''

हमारी रणनीति

- महिलाओं को लामबंद एवं संगठित कर स्वयं सहायता समूहों, महासंघों का गठन करना।
- समूहों के स्वतः संचालन एवं स्व प्रबन्धन हेतु क्षमता विकास करना।
- मुख्य धारा के साथ समूहों का समन्वयन।
- आजीविका के विचारों से समूहों को परिचित कराना, आजीविका से संबन्धित मुद्दों के पहचान एवं समाधान हेतु समूहों का क्षमता विकास करना।
- आजीविका संबर्द्धन।
- पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाना और उसका संबर्द्धन करना।
- शिक्षा को बढ़ावा देना।
- पंचायतीराज के तहत सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहन देना।
- जेण्डर–विभेद एवं महिलाओं के खिलाफ हो रहे उत्पीड़न एवं हिंसा के विरूद्ध आन्दोलनों व सकारात्मक सामूहिक पहल को प्रोत्साहित करना।

कार्यक्षेत्र

उत्तरापथ सेवा संस्था सम्पूर्ण भारतवर्ष में कार्य कर सकने के लिए वैधानिक रूप में पंजीकृत है, किन्तु संस्था वर्तमान में उत्तराखण्ड के जनपद पिथौरागढ़ के चार विकासखण्डों कनालीछीना, डीडीहाट, बेरीनाग और मुनस्यारी के लगभग गॉवों में कार्य कर रही है।

उत्तरापथ द्वारा वर्ष 2010–2011 में संचालित गतिविधियॉं

आजीविका संबर्द्धन

वर्ष 2010–2011 के लिए **सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई** से प्राप्त सहयोग से सब्जी की खेती की शुंरूआत कराना तथा उसे व्यावसायिक खेती के रूप में अपनाने के लिए तैयार कराना था।

लक्ष्य–आजीविका के रूप में सब्जी की खेती की शुरूआत कराना, जो पूर्णरूपेण महिला स्वयम् सहायता समूहों द्वारा स्व–प्रबन्धकीय हो।

कार्य क्षेत्र– विकास खण्ड– कनालीछीना, डीडीहाट, बेरीनाग, मुनस्यारी।
जनपद– पिथौरागढ़, प्रदेश– उत्तराखण्ड।

महिला स्वयम् सहायता समूहों तथा किसान क्लबों का गठन

प्राप्त ऑकड़ों के विश्लेषण से उपयुक्त गॉव/तोक का चयन कर 2 क्लस्टर (सिलिंगढ़घाटी, सुगम–मुवानी) के अन्तर्गत 34 स्वयम् सहायता समूहों तथा 10 किसान क्लबों का गठन किया गया। जिसके माध्यम से लगभग 500 परिवारों तक सीधे पहुॅच हो सकी। स्वयम् सहायता समूहों का को अल्पबचत हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। सामुदायिक सहभागिता के तहत सभी समूह सदस्य अपनी मासिक बचत, बैठक करना, कार्यवाही पंजिका लिखना तथा आवश्यक प्रपत्रों का रखरखाव कर रहे हैं।

समूहों, किसानों व संस्था कार्यकर्ताओं की क्षमतावृद्धि

प्रशिक्षण श्रृॅखला के तहत समूह सदस्यों की दो प्रकार से क्षमतावृद्धि की गयी।
प्रथम संस्थागत ढॉचागत क्षमतावृद्धि–
स्वयम् सहायता समूह की आवश्यकता, महत्व, उपयोगिता विषय पर फील्ड लेबल प्रशिक्षण, शैक्षणिक भ्रमण तथा आवासीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया जिनमें समूह की अवधारणा, अनुशासन, प्रपत्रों का रख–रखाव व लेखा–जोखा, नेतृत्व क्षमता विकास आदि प्रमुख रूप से रहे।

द्वितीय परियोजना अभिमुखीकरण क्षमतावृद्धि (सब्जी की खेती)–
सब्जी की खेती को प्रोत्साहित करते हुए महिला किसानों को व्यावसायिक खेती के तरीको, तकनीकी जानकारी, रोगों से रोकथाम, उन्नत बीजों की जानकारी एवं उनका प्रयोग, अनुभवों से सीख, बाजार की जानकारी व प्रबन्धन आदि विषयों पर क्षमतावृद्धि हेतु कृषि विशेषज्ञों, कृषिगत संस्थानों, फील्ड डेमोस्ट्रेशन, एक्सपोजर, गोष्ठी एवम् किसान मेलों में प्रतिभाग तथा कृषि विशेषज्ञों द्वारा फील्ड व आवासीय प्रशिक्षणों आदि माध्यमों का प्रयोग किया गया।

आजीविका संवर्द्धन की भुरूआत

व्यावसायिक सब्जी की खेती हेतु प्याज, मटर, गोभी, मूली, राई, शिमला मिर्च, हरी मिर्च, फ्रॉसबीन, बैगन, टमाटर, लौकी, कद्दू, खीरा आदि की खेती को प्रोत्साहित किया गया। किसानों

द्वारा व्यावसायिक खेती को अपनाकर स्थानीय बाजार में सब्जियों को बेचा गया।

बाजार सर्वेक्षण– स्थानीय सब्जी की उपलब्धता, मॉग, खपत तथा मूल्य को आधार मानकार समय–समय पर सर्वेक्षण किया गया। समय–समय पर कृषि विशेषज्ञों, सहायकों का सीधे फील्ड विजिट करा कर सब्जी की खेती तथा उद्यान सम्बन्धी रोग उपचार आदि की जानकारी से किसानों का लाभान्वित किया गया। आजीविका संवर्द्धन को और अधिक मजबूत करते हुए सब्जी की खेती के अतिरिक्त मसाले, सीरियल्स तथा उद्यान की खेती हेतु अभिमुखीकरण किया गया।

बाढ़ राहत कार्यक्रम 2010–2011

भारी वर्षा के कारण धान की खड़ी फसल लगभग पूर्णतः समाप्त हो गयी। जहॉ एक ओर खाद्यान्न का संकट था वहीं दूसरी ओर रबी की फसल हेतु बीज खरीद हेतु धन की आवश्यकता। जमशेद जी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई से प्राप्त वित्तीय सहयोग से उत्तरापथ ने अपने वर्तमान के परियोजना क्षेत्र के किसानों के लिए उक्त संकट से

राहत पाने हेतु रबी की फसल हेतु उन्नत किस्म का गेहूँ बीज (फाउण्डेशन) उत्त्रॉचल तराई सीड कारपोरेशन, पंतनगर से तथा उन्नत किस्म का आलू बीज मण्डी से क्रय कर 34 स्वयम् सहायता समूह के 278 किसानो को निःशुल्क आपूर्ति कराया, ताकि अगले वर्ष किसान इसे बीज के रूप में प्रयोग कर सकें।

इसके अतिरिक्त चावल वितरित सिंलिंगढ़घाटी में मरम्मत सामुदायिक हुए इनको फिर से लाया गया। उक्त

गरीब किसानों को किया गया। क्षतिग्रस्त घराटों की भागीगदारी से करते दैनिक उपयोग में सभी कार्यों के

क्रियान्वयन हेतु वित्तीय सहयोग जमशेदी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई से प्राप्त हुआ।

Distribution of Inputs to Farmers

Wheat Seed

Varieties of wheat seed introduced-
Foundation- HS- 365
Certified- VL-892, VL 738, HS- 365

TOTAL NO OF FARMERS COVERED WITH			**278**
Wheat Seed			
Variety	**Quantity Foundation (Qutl)**	**Quantity Certified (Qutl)**	**Total Quantity (Qutl)**
HS- 365	18.00	10.00	28.00

VL-892		9.80	9.80
VL 738		3.20	3.20
Total quantity of Seeds distributed- 41 quintals			
Agriculture Land in use (hectare) – 41 hectare			

Potato seed .
Valley- Kufari jyoti
High attitude- Kufari giriraj

POTATO SEED

Variety	Quantity (Qutl)	Variety	Quantity (Qutl)
Kufari Jyoti	7.40	Kufari Giriraj	6.60
Total quantity of Seeds distributed- 14 quintals			
Agriculture Land in use (hectare) – 10 hectare			

अनुश्रवण एवम् मूल्यॉकन

परियोजना के सफल क्रियान्वयन हेतु उत्तरापथ द्वारा परियोजना अवधि में नियमित अनुश्रवण किया जाता रहा। नियमित फील्ड विजिट के माध्यम से किसानों की समस्याओं की पहचान व उनका समाधान ढूँढना, कृषि विशेषज्ञों की सलाह व उनका पालन, किये गये कार्यों का मूल्यॉकन व सुझाव आदि माध्यमों से किसनों को आजीविका संवर्द्धन के लिए प्रेरित किया जाता रहा।

किसान क्लब प्रोत्साहन कार्यक्रम (वर्श 2010.—2011)

किसान क्लब के ''नेमी कार्यकलाप''

उद्घाटन/ परिचयात्मक कार्यक्रम

कार्यक्रम की उपलब्धियॉ

किसानों में किसान क्लबों की उपयोगिता की स्पष्ट समझ तथा उनके सम्पूर्ण विकास हेतु नाबार्ड की लाभकारी योजनाये व सोच

- ☞ सरकारी विभागों से सीधे सम्बन्ध व लाभकारी योजनाओं की प्राप्ति हेतु पहल
- ☞ कृषिगत समस्याओं व जानकारियों (सब्जी की खेती, फसल व बागवानी) के सबंध में विशेषज्ञों से सीधी वार्ता
- ☞ किसान क्लब की ऋण आवश्यकता की पूर्ति हेतु बैंकों की सकारात्मक भूमिका
- ☞ पशुंधन व डेयरी विकास हेतु अच्छी नस्ल के पशुओं को पालना और नस्ल सुधार तथा टीकाकरण को प्रोत्साहन देना

उपस्थित विशिष्ट आमंत्रित व्यक्ति	
सरकारी विभागों के अधिकारी / प्रभारी	**उपस्थित वॉलंटियर व ग्रामीण किसान**
जिला विकास प्रबन्धक, नाबार्ड, पिथौरागढ़	तड़केश्वरी किसान क्लव चिटगालगॉव
कृषि वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, पिथौरागढ़	सुगन्ध किसान क्लव सौगॉव
जिला लीड बैंक अधिकारी, पिथौरागढ़	प्रयास किसान क्लव गोबराड़ी
शाखा प्रबन्धक, उत्तरॉचल ग्रामीण बैंक	नवज्योति किसान क्लव मुवानी
एल0 ई0 ओ0, पशुपालन विभाग	विकास किसान क्लव मायल
बैंकर्स भारतीय स्टेट बैंक	संकल्प किसान क्लव रौड़ा
प्रभारी उद्यान	प्रभात किसान क्लव खतेड़ा
	प्रगतिशील किसान क्लव चामा
	विश्वास किसान क्लव सींणी
	सदाबहार किसान क्लव नापड़

विशेषज्ञ से मिलें कार्यक्रम–1

कार्यक्रम की उपलब्धियॉ

- पशुपालकों को पशुपालन सम्बन्धी तकनीकी जानकारी जैसे–नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गर्भाधान की उपलब्ध सुविधा तथा डेयरी विकास को बढ़ावा देकर आमदनी में वृद्धि
- पशुओं की देखरेख तथा उनके स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील होना
- बीमार पशुओं का उपचार
- टीकाकरण व दवाई वितरण

वि ोशज्ञ से मिलें कार्यकम–2

कार्यकम की उपलब्धियॉ

- ☞ उद्यान विभाग प्रदत्त सुविधाओं व लाभों की जानकारी
- ☞ पौधों की छटनी या चौपिंग का प्रदर्शन
- ☞ सब्जी बीज (लौकी, कद्दू, टमाटर) वितरण
- ☞ हल्दी व अदरक के बीजों का प्रचार–प्रसार
- ☞ फलोत्पादन हेतु जानकारी– बादाम,आडू के पौंध वितरण
- ☞ नई प्रजाति के बादाम और आडू के पौंध वितरण
- ☞ रतुवारोग के निराकरण के टिप्स
- ☞ दवाई वितरण (आलू तथा प्याज की खेती में रोगथाम हेतु)

महिला स ाक्तिकरणव बाल विकास

बालवाड़ी केन्द्रों का संचालन

इस कार्यकम का मुख्य उद्देश्य बच्चों को व्यावहारिक दृष्टि से पठन–पाठन को रूचिकर ढ़ंग से सीखने के प्रति लालाहित कराना रहता है।

बालवाड़ी केन्द्र उस स्वच्छ और भयमुक्त वातावरण का नाम है , जहॉ पर 2 से 4 वर्ष तक के बच्चों का प्रतिदिन 4 घण्टे की अवधि में शिक्षिका द्वारा खेल–खेल में पढ़ाते हुए उनका सर्वांगीण विकास किया जाता है। प्राईमरी में प्रवेश लेने से पहले बच्चों में पढने की अभिरूचि पैदा करना, मॉ को 4 घण्टे आराम करने या आवश्यक घरेलू कामकाज करने का मौका मिलना इसके जीवन्त प्रमाण हैं।

बाल मेला

वर्ष में किये गये विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों मे आये बदलाव, उनकी भाव–भंगिमाओं को देखने व समझने के उद्देश्य से बाल मेलाओं का आयोजन किया जाता है। बाल विकास की प्रासंगिकता ध्यान में रखकर बालवाड़ी केन्द्रों से जुड़े बच्चों के लिए अलग–अलग गॉवों में बाल मेला का आयोजन करना है, जिससे बच्चों में आये बदलाव और उनकी प्रतिभा का प्रदर्शन अभिभावको के सामने रखा जा सकता है।

बाल मेले के आयोजन से विभिन्न कार्यकमों जैसे– भावगीत, लोकगीत, कविता, नाटक के माध्यमों से बच्चों में अभिव्यक्ति, आत्मविश्वास की वृद्धि, प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा होना तथा उनके अन्दर की झिझक दूर होती हैं। खेल, खिलौनों के माध्यम से उनकी अभिरूचि और कल्पनाशीलता का मूल्यॉकन किया गया। बच्चों को पुरूस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया।

फेडेरेशन तथा किशोरी सगठनमजबूतीकरण

महिला सशक्तिकरण, जल, जंगल, जमीन एवं पर्यावरण आदि मुद्दों पर विगत 17 वर्षो से कार्य करने वाला संगठन जो 'उत्तराखण्ड महिला एकता परिषद' के नाम से जाना जाता है और जिसका संचालन उत्राखण्ड सेवानिधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा किया जाता है, उत्तरापथ सेवा संस्था ने उक्त परिषद के साथ जुडकर लगभग 15 गॉवों में महिलाओं को संगठित कर फेडेरेशन का गठन किया है, जिसे क्षेत्रीय परिषद के नाम से जाना जाता है।

स्थानीय मुद्दों के तहत समूह गोष्ठियों के माध्यम से महिलाओं को संगठन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया, इस प्रक्रिया के दौरान महिला संगठनों का निर्माण कर उन्हें उनके हक–हकूक के विषय में गोष्ठियों, प्रशिक्षणों, एक्सपोजर के माध्यम से जागरूक किया गया, ताकि सामूहिक भागीदारी से गॉव की दिशा व दशा तय हो सकेगी, साथ ही मातृशक्ति को पहचान मिल सकेगी।

महिला सम्मेलन

इस कार्यक्रम में संस्था द्वारा महिला सशक्तिकरण के तहत परियोजना क्षेत्र के महिला संगठनों का सम्मेलन किया गया, जिसमें क्षेत्र के लगभग 150 महिलाओं और किशोरियों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से उनके जीवन से जुड़े मुद्दों जैसे जल, जंगल, जमीन और पंचायतीराज, हक–हकूक व सामाजिक कुरीतियों आदि विषयों पर चर्चा, गीत, भाषण, नाटक आदि का प्रदर्शन किया गया।

पंचायतीराज जागरूकता कार्यक्रम

उत्तरापथ सेवा संस्था द्वारा ग्राम पंचायतों और संगठन के प्रतिनिधियों के साथ बैठकों का आयोजन कर पंचायत के अधिकार एवं जिम्मेदारियों, कमेटी का निर्माण, बैठकों का महत्व उनकी संख्या एवं तरीका, पंचायत में महिला प्रतिनिधियों की भूमिका, मनरेगा आदि विषय पर विस्तृत चर्चा कर समझ मजबूत बनायी।

पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम

पर्यावरण आज का सबसे महत्वपूर्ण और ज्वलन्त विषय है। हमारे दैनिक रोजमर्रा की जिन्दगी में कई ऐसे कामकाज हैं, जिनके कारण हम जाने– अनजाने में वह सारे कार्य करते हैं, जिनसे पर्यावरण को खतरा पहुॅचता है। जंगलों में लगने वाली आग से भीषण तबाही ही नही बल्कि पर्यावरण की रीढ़ कहे जाने वाले जंगल, पेड़–पौधे चन्द घण्टों में जलकर राख हो जाते हैं। पिछले कुछ वर्षों से यह सिलसिला चला आ रहा है, जिसके कारण जंगल उस गति से नहीं पनप रहे है, जैसे होना चाहिए। क्योंकि छोटे पौधों को बढ़ने का अवसर नहीं मिल रहा है। यदि इन घटनाओं को समय रहते नहीं रोक पाये तो यह पर्यावरण व मानव जीवन के लिए

गम्भीर खतरा बन सकता हैं। सामुदायिक भागीदारी से इस पर नियत्रण पाने के लिए ही समुदाय में बैठकों का आयोजन विभिन्न गॉवों मे किया गया।

संगोष्ठी एवं बैठकें

नियमित रूप से होने वाली बैठकों में निम्न मुद्दे चर्चा के मुख्य विषय होते हैं, और जनजागरूकता के माध्यम से उनके समाधान पर जोर दिया जाता है।

- ☞ गॉव की छोटी–बढी योजनाओं को प्रभावी तरीके से संचालित कराने के लिए महिला प्रतिभागियों की पंचायत में भूमिका।
- ☞ पंचायतीराज में मिलने वाले महिला आरक्षण का लाभ उठाते हुए विकास के मार्ग को प्रसस्त करना।
- ☞ पर्यावरण की जानकारी उसके प्रभाव। उसमें खासकर महिलाओं की भूमिका। उसका संबर्द्धन।
- ☞ वनों का अन्धाधुन्ध कटान रोकना, इससे होने वाले दुष्परिणाम से इसकी रोकथाम करना।
- ☞ घटती वन सम्पदा और उसका अनुचित दोहन पर अंकुश।
- ☞ खनिज सम्पदाओं का अवैज्ञानिक तरीके से दोहन पर रोक तथा खनिजों की वैधानिक दोहन नीति पर स्थानीय समुदाय का प्रतिनिधित्व एवं परमिट आबंटन में ग्रामीणों का बरीयता देना।
- ☞ जंगलों को आग लगने से बचाना।
- ☞ घटते जलस्रोतों पर ध्यान संकेन्द्रित कराना और उसके निदान के प्रयास कराना।
- ☞ फसलों पर पर्यावरण का कुप्रभाव तथा फसलों को बीमारियों से रोकथाम के उपाय।
- ☞ गॉव की सहभागिता से वनों को लगाना, चरागाहों का संवर्द्धन, माफियों को रोकना, कठोर कानून बनाना, सरकार का हस्तक्षेप।

संस्था की आगे की सोच

''उत्तरापथ सेवा संस्था अपने मि न के तहत आजीविका संवर्द्धन के कार्यक्रमों मुख्यतः कृषिगत, प्राथमिक ि क्षा, पर्यावरण संवर्द्धन, आपदा प्रबन्धन आदि परियोजनाओं के कियान्वयन हेतु अपना ध्यान संकेन्द्रित करेगी।''

वर्ष 2010–2011 में संचालित कार्यक्रमों हेतु वित्तीय सहयोग

- ☞ आजीविका संवर्द्धन कार्यक्रम के लिए **सर दोराबजी तथा जम ोदजी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई**।
- ☞ किसान क्लब प्रोत्साहन हेतु **नाबार्ड, उत्तराखण्ड।**
- ☞ बालवाडी कार्यक्रम, संगठन मजबूतीकरण के कार्यक्रमों के लिए **उत्राखण्ड सेवानिधि पर्यावरण ि क्षा संस्थान, अल्मोड़ा**।

— 0 —

अध्यक्ष / सचिव
उत्तरापथ सेवा संस्था